"माध्यमिक स्तर के आदिवासी एवं गैर आदिवासी विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य और संवेगात्मक बुद्धि के संदर्भ में शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन"

आई०आई०एम०टी० विश्वविद्यालय, मेरठ
के अन्तर्गत
शिक्षा शास्त्र विषय में
डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (पीएच.डी) की
उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध प्रबंध की संक्षिप्त रूपरेखा

UGC Approved
Section 2(f) & 12B

शोधार्थी
रंजीत कुमार सिंह
प्रवेश संख्या– 21190314
नामांकन संख्या– IIMTUA/0409

शोध निर्देशिका
डॉ0 सरिता गोस्वामी
एसोसिएट प्रोफेसर

शिक्षा संकाय

आई०आई०एम०टी०, विश्वविद्यालय
'ओ' पॉकेट, गंगा नगर, मवाना रोड, मेरठ (उ०प्र०)

2021

"माध्यमिक स्तर के आदिवासी एवं गैर आदिवासी विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य और संवेगात्मक बुद्धि के संदर्भ में शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन"

1. परिचयः–

छात्रों की गुणवत्तापूर्ण स्कूली शिक्षा कई कारकों पर निर्भर करती है। इन कारकों का अध्ययन करना बहुत महत्वपूर्ण है। झारखंड भारत के पिछड़े और गरीब राज्य में से एक है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए राज्य की स्थिति अच्छी नहीं है और बच्चों की आर्थिक और पारिवारिक पृष्ठभूमि विविध हैं। राज्य में कई आदिवासी और गैर आदिवासी क्षेत्र हैं जहां परिवारों के बीच बहुत असमानता है।

इसलिए, उन छात्रों के बीच मतभेदों का अध्ययन करने की बहुत आवश्यकता है जो आदिवासी और गैर आदिवासी परिवार से हैं। छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि पर मानसिक स्वास्थ्य, छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि जैसे कारकों का प्रभाव पड़ता है। इसलिए, आदिवासी और गैर आदिवासी छात्रों के बीच इन कारकों के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए वर्तमान अध्ययन की आवश्यकता है।

प्रस्तुत शोध में तीन मुख्य चर है, मानसिक, स्वास्थ्य, संवेगात्मक बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि। अतः यहाँ तीनों चरो का परिचय अनिवार्य है।

मानसिक स्वास्थ्यः–

समान्यतः यह समझा जाता है कि जब व्यक्ति किसी भी तरह का मानसिक बिमारी से ग्रस्त नहीं है तो वह मानसिक रूप से स्वस्थ्य है और इस अवस्था को मानसिक स्वास्थ्य की संज्ञा दी जाती है, परन्तु आधुनिक मनौवैज्ञानिक तथा चिकित्सकों का मत है कि सिर्फ मानसिक बिमारी से मुक्त होने पर ही व्यक्ति को मानसिक स्वास्थ्य नहीं कहा जा सकता है, क्योंकि मानसिक रूप से स्वास्थ्य व्यक्ति में भी कभी–कभी मानसिक बिमारी के लक्षण जैसे–आवेगशीलता, सांवेगिक–अस्थिरता, अनिद्रा आदि लक्षण दिखाई पड़ते है। इसलिए आधुनिक नैदानिक मनोवैज्ञानिक ने मानसिक स्वास्थ्य को समायोजन शीलता की क्षमता को मुख्य कसौटी मानकर इसे परिभाषित किया हैः–

स्ट्रेन्ज 1965 के अनुसार– ''मानसिक स्वास्थ्य से तात्पर्य वैसी सीखे गए व्यवहार से होता है जो समाजिक रूप से अनुकूली होते है और जो व्यक्ति को अपनी जिंदगी के साथ पर्याप्त रूप से मुकाबला करने के अनुमति देता है''।

हारविज तथा स्कीड 1999 के अनुसारः ''मानसिक स्वस्थ्य में कई आयाम सम्मिलित होते है—आत्म—सम्मान, अपने अंतशक्तियों का अनुभव, सार्थक एवं उत्तम संबंध बनाये रखने की क्षमता तथा मनोवैज्ञानिक श्रेष्ठता ।''

ए0 के0 सिंह0 एवं डॉ0 अल्पना सेन गुप्ता 1989 :—

धनात्मक मानसिक स्वास्थ्य के विभिन्ना तत्वों की समीक्षा करके निम्न छः (6) प्रमुख तत्वो को बतलाया हैः—

(a) समायोजन

(b) सांवेगिक स्थिरता

(c) बुद्धि

(d) स्वतंत्रता

(e) सुरक्षा—असुरक्षा

(f) क्रिया—स्तर

उपर्युक्त तत्वों के संयोग से धनात्मक मानसिक स्वास्थ्य के संप्रत्यय का प्रादुर्भाव हुआ है।

संवेगात्मक बुद्धिः—

सामान्यतः सह समझा जाता है कि व्यक्ति की सफलता एवं उपलब्धियाँ उसकी बुद्धि लब्धि (I.Q.) पर आधारित होता है जिसकी बुद्धिलब्धि अधिक होती है, समान्य उसके जिंदगी की उपलब्धि भी अधिक होती है, परन्तु आधुनिक शोधों से यह स्पष्ट हो गया है कि व्यक्ति को अपनी जिंदगी में जो भी सफलता प्राप्त होती है, उसका मात्र 20 प्रतिशत की बुद्धिलब्धि (I.Q.) के कारण होती है और 80 प्रतिशत संवेगात्मक बुद्धि (E.Q.) के कारण होता है। दो अमेरिकन मनोवैज्ञानिक ''सैलोभी एवं मेयर'' 1990 ने सांवेगिक बुद्धि पद का प्रतिपादन किया परन्तु इसकी वैज्ञानिक एवं सैद्धान्तिक व्याख्या गोलमैन 1998 द्वारा की गयी है। गोलमैन 1994 के अनुसार—संवेगात्मक बुद्धि को परिभाषित करते हुए यह कहा है कि यह दुसरो एवं स्वयं अपने के भावों को पहचानने की क्षमता तथा अपने आप को अभिप्रेरित करने एवं अपने तथा अपने सम्बंधों में संवेग को प्रबंधित करने की क्षमता है। षोलमैन ने संवेगात्मक क्षमताओं के चारो समुहों का वर्णन किया है—

(a) आत्म— अवगतता

(b) आत्म—प्रबंधन

(c) सामाजिक चेतना

(d) सामाजिक कौशल

शैक्षिक उपलब्धिः— मानव जीव के लिए शिक्षा एवं धनात्मक एवं महत्वपूर्ण पक्ष है, अच्छी एवं गुणात्मक शिक्षा उपलब्धि या सफलता का आधार होता है, साथ ही साथ बच्चों के भविष्य तथा देश के भविष्य का निर्माण करता है। बच्चों के आवश्यक पहलु का विकास में **स्कूली शिक्षा** का ही महत्वपूर्ण योगदान होता है।

अतः शिक्षा मनोविज्ञानिक तथा शैक्षणिक शोधकर्ता इस बात पर बल डालते है कि किस प्रकार बच्चो का शैक्षणिक उपलब्धि को उसके द्वारा विभिन्न विषयों में अंक या ग्रेड द्वारा निरूपित किया जाता है।

आधुनिक प्रतियोगिता माहौल मे बच्चों द्वारा प्राप्त अंक या ग्रेड उसके जीवन सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है साथ ही साथ यह उपलब्धि उसके आत्म—सम्मान तथा आत्म—विश्वास को बढ़ाता है।

एनास्तासी—1961 के अनुसार— शैक्षिक उपलब्धि विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त सफलता के स्तर का वह मूल्यांकन है जो विद्यार्थियों के शैक्षिक निर्देशों को समझने के प्रयास एवं उनके स्तर व आयु के अनुसार निर्धारित पाठ्यक्रम के लक्ष्यों की प्राप्ति से अभिव्यक्त होता है।

आदिवासीः—

आदिवासी शब्द दो शब्दो ''आदि और वासी'' से मिल कर बना है इसका अर्थ मूल निवासी होता है। भारत की जनसंख्या का 8.6 प्रतिशत (10 करोड.) जितना बड़ा हिस्सा आदिवासी का है। पुरानत लेखों में आदिवासी को अष्विका और वनवासी भी कहा गया है।

गैर आदिवासीः—

समान्यतः जो आदिवासी नहीं है उसे गैर आदिवासी कहते है इसमें अनुसूचित जाति, पिछड़ी जाति, समान्य जाति के लोग आते है।

2. सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

1. फैनिन बारबरा एलेन (2002) ने अपने अध्ययन ''द कन्ट्रीस्यशन ऑफ इमोशनल इंटेलिजेन्स टू एकेडमिक अचीवमेन्ट एंड प्रोडक्शन'' में यह पाया कि सांवेगिक बुद्धि का औसतन ग्रेड प्वाइंट एव शैक्षणिक प्राप्तांक से महत्वपूर्ण सहसम्बन्ध है। शोध में यह भी पाया गया कि विश्लेषणात्मक बुद्धि से सामान्य बुद्धि का कोई स्पष्ट सम्बन्ध नहीं है।

2. अब्दुल्लाह मारिया चोंग एट ऑल (2004) ने अपने शोध के दौरान यह पाया कि सांवेगिक बुद्धि एवं स्कूली क्रियाओं के प्रति नाकारात्मक के दरम्यान रेखीय नकारात्मक सम्बन्ध है। उन्होने अपने अध्ययन ''इमोसनल एटेंलिजेन्स एवं एकेडमिक अचीवमेंट अमॉन्ग मलेशियन सकेंडरी स्टूडेन्टस, '' में यह भी पाया कि शैक्षणिक उपलब्धि एवं सांवेगिक बुद्धि में एक रेखीय सम्बन्ध है।

3. गाखर एच0डी0 एवं मन्हास के0डी0 (2005) ने ''कोगनेटिव कोरिलेशन ऑफ इमोशनल इंटेलिजेन्स ऑफ एडोलसेन्टस'' विषयक अध्ययन में यह पाया कि सांवेगिक बुद्धि एवं सांवेगिक चरो यथा बुद्धि, क्रियात्मकता, एवं शैक्षणिक उपलब्ध के बीच महत्वपूर्ण सकारात्मक सम्बन्ध है। उन्होने अपने अध्ययन के दौरान यह भी पाया कि संवेगात्मक बुद्धि का लिंग के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है।

4. सुजुबेरला ऑल (2006) ने अपने शोध विषय ''इमोशनल इंटेलिजेन्स एवं स्कूल एक्सेस'' में यह पाया कि टेरा नोना कम्पोजिट एवं संवेग के बीच सह–सम्बन्ध है।

5. दर्शाना एम (2007) ने अपने शोध के दौरान यह प्रतिपादित किया कि बालक एवं बालिकाओं की बुद्धि एवं संवेग प्रयोजना में अंतर होता है। उन्होने अपने अध्ययन में यह पाया कि बालक सांवेगिक बुद्धि एवं सांवेगिक समझ में बालिकाओं से आगे है।

6. रोड जोसेफ सी0 यूनी एवं ऍट ऑल (2007) ने '' इमोशनल इंटेलिजेन्स एंड इंडीव्यूजवल परफॉर्मेंस'' विषयक अपने शोध में यह पाया कि सांवेगिक बुद्धि के प्रभाव प्रत्यक्ष न होकर अप्रत्यक्ष होते है।

7. रूखसाना नजर एवं जीनत नजर (2008) ने अपने शोध के माध्यम से यह सिद्ध किया कि बालकों की अपेक्षा बालिकाओं में किशोरावस्था में ज्यादा सांवेगिक बुद्धि पायी जाती है। उन्होने अपने अध्ययन ''इमोशनल एंटेलिजेन्स एंड क्रिएटिवीटी'' मे यह भी पाया कि सांवेगिक बुद्धि का क्रियात्मक से धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

8. चोपड़ा वनिता (2009) ने अपने शोध के दौरान यह प्रतिपादित किया कि सांवेगिक बुद्धि छात्रों एवं शिक्षकों दोनों को ही भावनाओ के नियंत्रण मे सहायक है।

9. महाजन मोनिका (2011) ने अपने अध्ययन के दौरान यह पाया कि शैक्षणिक उपलब्धि एवं सांवेगिक बुद्धि का सीधा सह सम्बन्ध है। यह लिंग पर निर्भर नहीं करता और बालक एवं बालिकाओं मे समान रूप से पाया जाता है।

10. चामुन्डेश्वर एस0 (2013) ने अपने एक शोध के दौरान यह पाया कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि एवं सांवेगिक बुद्धि में एक धनात्मक सह सम्बन्ध है।

11. शर्मा एम०के0 (2014) ने सांवेगिक बुद्धि पर एक अध्ययन के दौरान यह पाया कि ज्यादा एवं कम सांवेगिक बुद्धि वाले छात्र–छात्राओं का शैक्षणिक उपलब्धि पर सीधा सहसम्बन्ध था। ज्यादा सांवेगिक बुद्धि वाले छात्र–छात्राएँ ज्यादा शैक्षणिक उपलब्धि अर्जित करते है।

12. नदीम एन0ए0 एवं अहमद आई० (2016) ने अपने शोध के दौरान यह पाया कि सांवेगिक बुद्धि के पाँचो तत्वों के मामले में बालको का प्रर्दशन बालिकाओं से बेहतर था।

13. ग्वीन विर्थोन व्हाईट (2016) ने अपने अध्ययन में यह पाया कि मानसिक स्वास्थ्य शैक्षणिक उपलब्धियों पर प्रभाव डालती है। यह एक सीधा सह–सम्बन्ध है।

14. मेरेटिथ ओ कॉब्बर डैल क्लोनी एट ऑल (2019) ने अपने अध्ययन में यह पाया कि सकारात्मक मानसिक स्वास्थ्य छात्रों को शैक्षणिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव डालता है।

15. सारा अगनार्फोस, मिमी बारमार्क एवं गुनिला सिइसजो (2020) ने अपने अध्ययन'' सोशल माईकी एवं साइकाट्रिक इपिडीमेलोजी'' में यह पाया कि मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं का शैक्षणिक उपलब्धि पर अत्यंत बुरा प्रभाव पड़ता है।

3. शोध समस्या का विवरणः–

प्रस्तुत शोध में माध्यमिक स्तर के आदिवासी एवं गैर आदिवासी विद्यार्थियों का शैक्षिक उपलब्धि स्तर का मापन करना है तथा साथ–ही–साथ शैक्षिक उपलब्धि पर मानसिक स्वस्थ्य तथा सांवेगिक बुद्धि के प्रभाव का अध्ययन करना है।

4. शोध अंतरालः–

मानसिक स्वास्थ्य एवं सांवेगिक बुद्धि का माध्यमिक स्तर के आदिवासी एवं गैर–आदिवासी बालक–बालिकाओं की शैक्षणिक उपलब्धता की प्राप्ति विषयक शोध बहुत कम हुए है। शोध की साहित्य समीक्षा से यह बात प्रर्दशित होती है कि सांवेगिक बुद्धि एवं मानसिक स्वास्थ्य के सहसंबंध को स्थापित करने वाले शोध भी लगभग नगण्य है। पूर्व मे किए गए शोधों के भौगोलिक क्षेत्र भी वर्तमान में प्रस्तावित शोध–क्षेत्र से काफी अलग रहे है। प्रस्तुत शोध इन अंतरालो को पूरा करने का एक प्रयास होगा।

5. अध्ययन के उद्देश्यः–

(i) माध्यमिक स्तर के आदिवासी एवं गैर–आदिवासी विद्यार्थियों की मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन करना ।

(ii) माध्यमिक स्तर के आदिवासी एवं गैर आदिवासी विद्यार्थियों के सांवेगिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना ।

(iii) माध्यमिक स्तर के आदिवासी एवं गैर आदिवासी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना ।

(iv) माध्यमिक स्तर के उच्च मानसिक स्वास्थ्य एवं निम्न मानसिक स्वास्थ्य के आदिवासी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना ।

(v) माध्यमिक स्तर के उच्च मानसिक स्वास्थ्य एवं निम्न मानसिक स्वास्थ्य के गैर आदिवासी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना ।

(vi) माध्यमिक स्तर के उच्च सांवेगिक बुद्धि एवं निम्न सांवेगिक बुद्धि के आदिवासी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना ।

(vii) माध्यमिक स्तर के उच्च सांवेगिक बुद्धि एवं निम्न सांवेगिक बुद्धि के गैर आदिवासी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना ।

(viii) माध्यमिक स्तर के आदिवासी विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य तथा शैक्षिक उपलब्धि के बीच सम्बन्ध का अध्ययन करना ।

(ix) माध्यमिक स्तर के गैर आदिवासी विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य तथा शैक्षिक उपलब्धि के बीच सम्बन्ध का अध्ययन करना ।

(x) माध्यमिक स्तर के आदिवासी विद्यार्थियों के सांवेगिक बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि के बीच सम्बन्ध का अध्ययन करना ।

(xi) माध्यमिक स्तर के गैर आदिवासी विद्यार्थियों के सांवेगिक बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि के बीच सम्बन्ध का अध्ययन करना ।

6. अध्ययन की परिकल्पनाएँः–

1 माध्यमिक स्तर के आदिवासी एवं गैर–आदिवासी विद्यार्थियों की मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

2 माध्यमिक स्तर के आदिवासी एवं गैर आदिवासी विद्यार्थियों के सांवेगिक बुद्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

3 माध्यमिक स्तर के आदिवासी एवं गैर आदिवासी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

4 माध्यमिक स्तर के उच्च मानसिक स्वास्थ्य एवं निम्न मानसिक स्वास्थ्य के आदिवासी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

5 माध्यमिक स्तर के उच्च मानसिक स्वास्थ्य एवं निम्न मानसिक स्वास्थ्य के गैर आदिवासी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

6 माध्यमिक स्तर के उच्च सांवेगिक बुद्धि एवं निम्न सांवेगिक बुद्धि के आदिवासी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

7 माध्यमिक स्तर के उच्च सांवेगिक बुद्धि एवं निम्न सांवेगिक बुद्धि के गैर आदिवासी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

8 माध्यमिक स्तर के आदिवासी विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य तथा शैक्षिक उपलब्धि के बीच सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

9 माध्यमिक स्तर के गैर आदिवासी विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य तथा शैक्षिक उपलब्धि के बीच सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

10 माध्यमिक स्तर के आदिवासी विद्यार्थियों के सांवेगिक बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि के बीच सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

11 माध्यमिक स्तर के गैर आदिवासी विद्यार्थियों के सांवेगिक बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि के बीच सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

7. शोध विधि

वर्तमान अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जाएगा।

7.1 प्रतिदर्शः–

झारखंड में कुल 24 जिले हैं उनमें से जिला गुमला को उद्देश्यपूर्ण कारण से चुना जायेगा।

प्रतिदर्श प्रक्रिया :

अध्ययन में छात्रों का चयन 20 स्कूलों से किया जायेगा। गुमला जिले के इन 20 स्कूलों को यादृच्छिक प्रतिचयन द्वारा चुना गया जायेगा।

फिर चयनित 20 विद्यालयों से दसवीं कक्षा के विद्यार्थियों की चार सूचियाँ बनाई जायेगीं। ये सूचियाँ इस प्रकार होगी–: 1. आदिवासी छात्रों की सूची 2. आदिवासी छात्राओं की सूची 3. गैर–आदिवासी छात्रों की सूची और 4. गैर–आदिवासी छात्राओं की सूची। प्रत्येक सूची से यादृच्छिक प्रतिचयन (लॉटरी पद्धति) के माध्यम से 125 विद्यार्थियों का चयन किया जायेगा। इस प्रकार कुल 500 विद्यार्थियों का चयन किया जायेगा। चयनित नमूने की संरचना नीचे दी गई हैः

विद्यार्थी	आदिवासी	गैर आदिवासी	कुल
छात्र	125	125	250
छात्राएं	125	125	250
कुल	**250**	**250**	**500**

7.2 शोध अभिकल्प :–

शोध में प्रयुक्त चर :

स्वतंत्र चर – मानसिक स्वास्थ्य तथा सांवेगिक बुद्धि ।

आश्रित चर – शैक्षिक उपलब्धि ।

7.3 ऑकड़ा संग्रह के लिए उपकरणः–

(i) **कुमार और गुप्ता ''मानसिक स्वास्थ्य बैटरी'':–**

मानसिक स्वस्थ्य बैटरी (MHB) का विकास अरूण कुमार सिंह तथा अल्पना सेन गुप्ता द्वारा 1987 में किया गया इसमें कुल एकांशों की संख्या–130 है जो

6 खण्डो में विभाजित किया गया है। 6 खण्ड क्रमशः संवेगात्मक स्थिरता, समग्र समायोजन, स्वायत्तता, सुरक्षा–असुरक्षा, स्वधारणा तथा बुद्धि है।

(ii) **सांवेगिक बुद्धि परीक्षणः–**

इस परिक्षण का विकास डॉ0 अरूण कुमार सिंह और डॉ0 श्रुति नारायण द्वारा किया गया है। इस परीक्षण मे कुल 31 प्रश्न है। जो कि चार विमाओं का मापन करता है।

(iii) **शैक्षिक उपलब्धि :–**

वर्तमान अध्ययन में शैक्षिक उपलब्धि को मापने के लिए 10वीं कक्षा के छात्रों की वार्षिक परीक्षा में प्राप्त अंक को लिया जायेगा।

7.4 ऑकड़ा विश्लेषण की योजनाः–

ऑकड़ो का विश्लेषण निम्न सांख्यिकी विधी द्वारा की जायेगी।

(a) केन्द्रिय प्रवृति मापन–माध्य

(b) माध्य का प्रसार–मानक विचलन

(c) उपसमुहों के बीच मध्य टी – परीक्षण

(e) समूह सह–संबंध गुणांक

(f) ग्राफ प्रस्तुतीकरण

8. शोध का महत्वः–

प्रस्तावित शोध सांवेगिक बुद्धि, मानसिक स्वस्थ्य का शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभावों को दर्शाने का एक प्रयास है।

प्रस्तुत शोध–शोध क्षेत्र के लिए अत्यंत लाभकारी होगा। नीति–निर्माण मे यह भविष्य में बेहद काम आ सकता है। जिससे की बच्चों के प्रशिक्षण एवं समाज निर्माण में सहायक होगा।

9. वर्तमान ज्ञान में योगदानः–

(i) प्रस्तुत शोध द्वारा वर्तमान समय में नई तथ्य का समावेश होगा कि मानसिक स्वास्थ्य तथा सांवेगिक बुद्धि का विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि का प्रभाव।

(ii) विद्यार्थियों के समायोजन का एक पूर्वकल्पना किया जा सकता है, शैक्षिक उपलब्धि अंक के आधर पर।

10. शोध का परिसीमनः–

वर्तमान अध्ययन के परिसीमन निम्नलिखित हैं–

(i) वर्तमान अध्ययन दसवीं कक्षा के छात्रों तक सीमित किया जायेगा।

(ii) अध्ययन को तीन मुख्य चरों जैसे मानसिक स्वास्थ्य, संवेगात्मक बुद्धि और शैक्षिक उपलब्धि तक सीमित किया जायेगा।

(iii) यह अध्ययन झारखण्ड के गुमला जिले के सरकारी विद्यालयों के 500 छात्रों तक सीमित किया जायेगा।

संभावित अध्यायः–

(1) प्रस्तावना

(2) सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

(3) अनुसंधान विधि एवं प्रक्रिया

(4) प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

(5) निष्कर्ष शैक्षिक निहितार्थ एवं भावी शोध हेतु सुझाव

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. फैनिन, बारबारा एलेन (2002), द कंडीस्यूशन ऑफ इमोशनल, एंटेलिजेन्स टू एकेडमिक अचीवमेंट एंड प्रोडक्शन (वाटड़ेन यूनिवर्सिटी) P-102

2. अब्दुल्लाह मारिया, चोंग एंड एलियास, हबीवा (2004) जर्नल ऑफ साइकोलॉजिकल, रिसर्च, वाल्यूम 19 (3–4), PP. 105-121

3. गाखर एच0डी0 एंड मन्हास के0डी0 (2005) ''कांगनिटिव कोरिलेटस् ऑफ इमोशनल एंटेलिजेन्स ऑफ एडोल्सेन्टस'' इंडियन एजुकेशनल एबस्ट्रेक्ट वाल्यूम 5 नं0– 142, एनसीआरटी, PP 7-8

4. सुजबेरला, ए0एल0 (2006) ''इमोशनल एंटेलिजेन्स एंड, स्कूल, सक्सेस, पीएचडी, थीसिस, वाल्डेन यूनिवर्सिटी।

5. दर्शाना एम० (2007) ''रिलेशनशीप बिटवीन इमोशनल, एंटेलिजेन्स, एंड सरटेन अचीवमेंट फेलिसिटेरिंग वैरियेबलस् ऑफ हायर सेकैंडरी स्कूल, स्टूडेन्स, '' एडुड्रैक्टस वाल्यूम 7 No.4 नीलकमल पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड PP. 25-34

6. रोड जे0सी0 मूनी, सी0एच0 अर्थाबुड डे, एम० एल0 नियर पी0पी0 रिबिन, आर0 एस0 बॉलविन, टी०टी० एट ऑल (2007), इमोशनल इंटेलिजेन्स एंड इनडिविजुवल परफोर्मेंस, इविडेंस, ऑफ डायरेक्ट एंड मोडेरेटेड इफेक्टस'' जर्नल ऑफ ऑर्गनाइजेशन विहेवियर 28, P-399-421

7. रूखसाना नजीर एंड जीनत नजीर (2008) "इमोशनल एंड क्रिएटीविटी" इंडियन साइकोलॉजिकल रिव्यू, वालयूभ 71, PP, 251–254.

8. चोपड़ा वनीता (2009)'' एजुकेशन एम्पलिकेशन ऑफ इमोशनल इंटेलिजेन्स फोर वेटर टीयर, एवं स्टूडेंट, परफार्मेंस ''न्यू दिल्ली।

9. महाजन मोनिका (2011), एकेडमिक, अचीवमेंट, इन रिलेशन इ इमोशनल इंटेलिजेन्स एंड स्प्रीइअल इंटेलिजेन्स होशियारपुर, पंजाब, जर्नल ऑफ इंडियन, एजुकेशन वाल्यूम 1 इश्यू।

10. चामुन्डेश्वर एम० (2013) ''इमोशनल इंटेलिजेन्स एंड एकेडमिक अचीवमेंट अमॉन्ग स्टूडेन्टस एट द हायर सेकेंडरी लेवल'' इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एकेडमिक, रिसर्च इन इकोनॉमिक्स, एंड मेनेजमेंट, साइंस (2) (4), 226–236

11. शर्मा एम०के0 (2014) ''इमोशनल एंटेलिजेन्स, प्रोडिक्टर ऑफ एकेडमिक परफार्मेस'' एन इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड साइकोलॉजी, 1 (2), 18–27.

12. नदीम एन0ए0 एंड अहमद आई (2016)'' इमोशनल इंटैलिजेन्स एंड अकेडमिक अचीवमेंट ऑफ सेकेन्ड्री स्कूल स्टूडेन्टस, श्रृखला एक शोधपटक वैचारिक पत्रिका 3(8), 17–23

13. ग्वोन बिर्योन व्हाईट (2016) ''मैंटल हेल्थ एंड एकेडमिक अचीवमेंट द इफेक्ट ऑफ सेल्फ इफिकेसी'' अक्टूबर 2016

14. मेरेडिथ ओ कर्नार, डैन क्लोनी, अमाड़ा, क्वालसीग, एंड शैरोन गोल्ड़फील्ड, (2019) ''पॉजिटीव मेंटल हेल्थ एंड एकेडमिक अचीवमेंट इन एलिमेन्ट्री स्कूल, न्यू एविडेंस फ्रॉम अ मैचिंग अनॉलिसिस'' सेज जर्नलस्

15. अगनाफोर्ग, एस0 बारमार्क, एस0 सिडेसजी (2020) ''मेंटल हेल्थ एंड अकेडमिक परफोर्मेंस अ स्टडी ऑन सेलेक्शन एंड काउसेशन एफेक्टस फ्रॉम चाइल्ड हुड टू अर्ली, एडल्टहुड'' साइकर्टी साइक्टर एविडेमऑल (2020)